MP Board Class 9th Hindi Navneet Solutions पद्य Chapter 9 जीवन दर्शन

अति लघु उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1.
'काँटे कम से कम मत बोओ' का क्या आशय है?
उत्तर:
इस पंक्ति का आशय यह है कि यदि तुमसे दूसरों की भलाई न हो सके तो कम-से-कम दूसरों के लिए मुसीबतें तो मत खड़ी करो।

प्रश्न 2.
भय से कातर होने पर मनुष्य की स्थिति कैसी हो जाती है?
उत्तर:
भय से कातर होने पर मनुष्य की स्थिति बड़ी ही दयनीय हो जाती है।

प्रश्न 3.
जीवन का सच क्या है?
उत्तर:
जीवन का सच मात्र संघर्ष है।

प्रश्न 4.
जीवन मार्ग में काँटे और कलियाँ क्या हैं?
उत्तर:
जीवन मार्ग में काँटे से अभिप्राय संकट और मुसीबतों से है तथा कलियों से अभिप्राय सुख-सम्पन्नता से है।

लघु उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1.
कवि अंचल के अनुसार दुनिया की रीति क्या
उत्तर:
कवि अंचल के अनुसार दुनिया की रीति यह है कि यातना तो शरीर सहता है पर रोता मन है। उसी तरह इस संसार में करता कोई है और भोगता कोई है। समाज में भी प्रायः यह देखा जाता है कि सम्पन्न लोगों की गलतियों का परिणाम निरीह गरीब लोगों को भोगना पड़ता है।

प्रश्न 2.
"संकट में यदि मुस्का न सके" भय से कातर हो मत रोओ" पंक्ति में कवि क्या कहना चाहता है?
उत्तर:
इस पंक्ति में कवि यह कहना चाहता है कि मनुष्य में इतना आत्मबल नहीं है कि वह संकट में मुस्करा न सके तो उसे भय से कातर होकर रोना भी नहीं चाहिए। क्योंकि ऐसा करने से उसके व्यक्तित्व की दुर्बलता प्रकट होती है।

प्रश्न 3.
गुप्तजी ने जीवन का संदेश किसे माना है और क्यों?
उत्तर:
श्रीजगदीश गुप्त ने जीवन का यह संदेश दिया है कि मनुष्य को कुछ ऐसा करना चाहिए जिससे उसका जीवन जड़वत् न रह जाए। जीवन में चाहे कैसी भी विपत्तियाँ आएँ अथवा सुखसम्पन्नता आए, मनुष्य को अपने लक्ष्य से डिगना नहीं चाहिए। ऐसा करने वाला व्यक्ति ही अपनी मंजिल को पा सकता है।

प्रश्न 4.
गुप्ता जी ने अपने हृदय को सशक्त बनाने के लिए क्या मार्ग सुझाया है?
उत्तर:
कवि ने अपने हृदय को सशक्त बनाने के लिए निरन्तर संघर्ष का मार्ग चुनने का उपदेश दिया है। जो व्यक्ति अपने लक्ष्य को पाने के लिए निरन्तर संघर्षशील रहता है वही मनुष्य जीवन में सफलता प्राप्त करता है।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1.
"काँटे कम-से-कम मत बोओ" कविता की केन्द्रीय भावना लिखिए।
उत्तर:
इस कविता का केन्द्रीय भाव यह है कि मानव को कभी भी अपने आपको दुर्बल नहीं समझना चाहिए। हमें जीवन पूरी जिन्दादिली से जीना चाहिए। यदि हम दूसरों के जीवन में सुख के फूल नहीं उगा सकते तो कम-से-कम हमें उनके मार्ग में काँटे तो नहीं बोना चाहिए। कहने का भाव यह है कि यदि बन सके तो दूसरों का हित करो उनको दुःख मत दो।

प्रश्न 2.
'वह जिन्दगी क्या जिन्दगी जो सिर्फ पानी सी बही' कथन को स्पष्ट कीजिए।
उत्तर:
इस पंक्ति का आशय यह है कि मनुष्य को परिस्थितियाँ अपने अनुकूल बनाने के लिए संघर्ष करना चाहिए न कि परिस्थितियों से हार मानकर चुप बैठ जाना चाहिए। व्यक्ति को पानी के उस स्वभाव को त्याग देना चाहिए कि जिधर भी ढलान मिले उधर बह ले। मनुष्य में तो इतनी सामर्थ्य है कि वह अपना मार्ग स्वयं बना लेता है।

प्रश्न 3.
निम्नलिखित काव्यांश का भावार्थ स्पष्ट कीजिए-
(अ) यदि बढ़ न सको.....मत बोओ।
उत्तर:
कवि का कथन है कि संकल्प बाहरी दुनिया के आडम्बर से उत्पन्न नहीं होता, यह तो मन के भीतर स्वतः उपजता है। यदि हम कुछ नया करना चाहते हैं तो इससे हमारी परेशानियाँ बढ़ती ही हैं, इससे हमारे कष्ट कम नहीं होते हैं।

यदि हमारे मन में थोड़ा-सा भी सन्देह रहता है तो उस सूक्ष्म अन्धकार में विश्वास की जड़ें जमती नहीं हैं। अतः विश्वास को मजबूत बनाने के लिए सन्देह के अन्धकार को बिल्कुल नष्ट कर देना चाहिए। हमें अपने विश्वास को इस प्रकार दृढ़ करना चाहिए जैसे बादलों के बीच हवा का जयघोष मुखर रहता है। कहने का भाव यह है कि जब बादल गर्जना करते हैं तब हमें हवा की स्थिति ज्ञात होती है। यदि तुम अपने मन में विश्वास को नहीं जगा सकते तो इस प्रकार का जीवन तुम्हारा व्यर्थ है। बिना विश्वास के तो जीवन इस प्रकार है जैसे श्वांस तो चल रही हो पर शरीर मृत अवस्था में हो। यदि तुम फूल नहीं बो सकते तो संसार में दूसरों के लिए काँटे मत बोओ।

https://www.evidyarthi.in/

(आ) है अगम चेतना.....स्वयं शमन।
उत्तर:
कविवर अंचल जी कहते हैं कि हे मनुष्यो! यदि तुम दूसरों के लिए फूल नहीं बो सकते हो तो कम-से-कम उनके लिए काँटे मत बोओ। भाव यह है कि यदि आप दूसरों का हित नहीं कर सकते तो कम-से-कम दूसरों की उन्नति में रुकावट तो मत बनो।

यह संसार अगम्य चेतना की घाटी है और संसारी मनुष्य बड़ा ही कमजोर होता है। जब मनुष्य अपने कार्यों से समाज में ममता की शीतल छाया बिखेरता है तो उससे स्वयं ही कटुता का शमन हो जाता है। जिस समय विपत्ति की ज्वालाएँ घुल जाती हैं तब जीवन के मुँदे हुए नेत्र स्वतः खुल जाते हैं। कहने का भाव यह है कि जब विपत्ति का बुरा समय बीत जाता है तो मानव के हृदय में स्वयं आनन्द की वर्षा होने लगती है और उस समय प्राणों का दुखी पवन निर्मलता धारण कर शान्ति से बहता रहता है।

हे मनुष्यो! यदि तुम संकट की दशा में मुस्करा नहीं सकते हो तो कम-से-कम भय से व्याकुल होकर रोओ तो मत। कहने का भाव यह है कि यदि तुममें इतना साहस और बल नहीं है कि संकट की दशा में भी तुम मुस्करा नहीं सकते हो तो कम-से-कम इतना साहस तो अपने में संचित करो कि भय से व्याकुल होकर रोओ मत अपितु उसका वीरता से सामना करो। यदि तुम दूसरों के जीवन में फूलरूपी खुशी नहीं भर सकते हो तो कम-से-कम इतना तो करो ही कि दूसरों के मार्ग में अथवा कार्य में उनके बाधक मत बनो।

(इ) सच हम नहीं.....हमको पोंछना।
उत्तर:
आगे कवि कहता है कि हमारे हृदय को किस बात से आनन्द प्राप्त हो सकता है, इस सत्य को हमें ही खोजना है। हमारे कष्ट किस प्रकार दूर हो सकते हैं, इसका समाधान भी हमें स्वयं करना है। बाहर का संसार हमें सुख नहीं दे सकता है। क्या हमारी सहायता आकाश करेगा या फिर पृथ्वी हमारी इस दीन दशा पर आँसू बहायेगी अर्थात् कदापि नहीं। हमें तो उसी रास्ते को चुनना है जिससे हमें ऊर्जा और उत्साह मिले। वास्तव में न सच हम हैं और न सच तुम हो अपितु सच तो मात्र संघर्ष ही है और इसी संघर्ष से मानव के जीवन में उत्कर्ष आता है।

काव्य सौन्दर्य

प्रश्न 1.
निम्नलिखित शब्दों के विलोम शब्द लिखिएहार, बड़ा, विश्वास, अपना।
उत्तर:

शब्द	विलोम
हार	जीत
बड़ा	छोटा
विश्वास	अविश्वास
अपना	पराया

प्रश्न 2.
वर्तनी सुधारिए-
उत्तर:
निरमल = निर्मल, घाटि = घाटी, विसवास = विश्वास, मरत = मृत्यु, कलीयां = कलियाँ।

प्रश्न 3.
निम्नलिखित पंक्तियों में निहित भाव सौन्दर्य स्पष्ट कीजिए
(क) मत याद करो.....बीता जीवन।
उत्तर:
इस पंक्ति में यह भाव निहित है कि तुम्हारे जीवन में जो भी विपत्तियाँ या संकट आए हैं उन्हें न तो तुम याद करो और न ही उनके विषय में सोचो। अपने जीवन को सुखी रखने का यही एक मंत्र है।

(ख) यदि बढ़ न सको ..... मत ढोओ।
उत्तर:
इस पंक्ति का भाव यह है कि यदि मनुष्य के मन में कुछ करने का विश्वास नहीं है तो उसका जीवन मृतक के समान है। वह केवल सांसों से अपने मृत शरीर को ढो रहा है।

(ग) जो नत हुआ ..... झरकर कुसुम।
उत्तर:
इस पंक्ति का भाव यह है कि जिस व्यक्ति ने परिस्थितियों से हार मान ली वह मृतक के समान है। जिस प्रकार डाली से झड़कर पुष्प सूख जाता है उसी प्रकार बिना संघर्ष के मनुष्य का जीवन भी सूख जाता है।

प्रश्न 4.
निम्नलिखित पंक्तियों में अलंकार पहचान कर लिखिए

1. अनसुना, अनचीन्हा करने से संकट का वेग नहीं कमता।
2. जो नत हुआ वह मृत हुआ, ज्यों वृत्त से झरकर कुसुम।
3. वह जिन्दगी क्या जिन्दगी जो सिर्फ पानी-सी बही।

उत्तर:

1. अनुप्रास अलंकार
2. उपमा अलंकार
3. उपमा अलंकार।

https://www.evidyarthi.in/